# सप्तर्षि-यात्रा

काशीखण्ड क अठारहवें अध्याय में सप्तर्षियों द्वारा स्थापित शिवलिंगो का स्थान-निर्देश तथा महात्म्य मिलता है। शिष्टाचार से ऋषिपंचमी के अतिरिक्त शुक्लपक्ष की सभी पंचमियों को भी यह यात्रा होती है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | अत्रीश्वर | : | गोकर्णेश्वर के समीप। लुप्त। अब नारद घाट पर मकान नं० डी० २५/११ में। |
| २. | मारीचीश्वर | : | चोरूआ गड़हा के पास लुप्त। |
| ३. | पुलहेश्वर | : | ब्रह्मनाल पर स्वर्गद्वार के पश्चिम । |
| ४. | पुलस्त्येश्वर | : | वहीं समीप में। मकान नं० सी० के० ३३/४३। |
| ५. | अंगिरेसेश्वर | : | १. जंगमबाड़ी में। २. स्वर्गद्वार के पश्चिम। |
| ६. | वशिष्ठेश्वर | : | १. वरणा-संगम के पार। २. वसिष्ठवामदेव में संकटाघाट पर और ३. ललिताघाट पर, जिस मन्दिर में गंगादित्य है। |
| ७. | कृत्वीश्वर | : | कंकरहा घाट के सामने वरणा नदी के उस पार पेड़ के नीचे। |

प्राचीन काल में संकटाघाट के ऊपर वसिष्टवामदेव मन्दिर में इन दोनों ऋषियों की मनुष्याकार मूर्तियाँ भी थी। जिनके स्थान पर अब केवल शिवलिंग ही बचे हैं। एक मूर्ति भी है।

विशिष्ठवामदेवौ च मूर्तिरूपधरावुभौ।
द्रष्टव्यौयत्नतः काश्यां महाविघ्नविनाशिनौ।।२९

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.